नमः टेऊँरामाय।। ॐ नमःसर्वानन्दाय।।

श्री सत् नाम साक्षी

सर्वानन्द - सन्देश

1 Jan., 1969

सारे मनुष्य संसार में सुख को ढूण्ढ रहे हैं। वह सुख उनका स्वरूप ही है।

2 Jan., 1969

व्यवहार अथवा परमार्थ में पुरूषार्थ करना चाहिये। पुरूषार्थी की जय है।

3 Jan., 1969

भगवान के नाम, सत् शास्त्रों, सन्त सत्गुरू के वचन में विश्वास और श्रध्दा करो, यही मोक्ष का सबसे बड़ा साधन है।

4 Jan., 1969

थोड़ा बोलना चाहिये। व्यर्थ कभी नहीं। कार्य मात्र बोलना ही वाणी का संयम है। "चुप जैसी मीठी नहीं वस्तु इसी जग माहिं।"

5 Jan., 1969

सत्य बोलना मनुष्य का भूषण है। अपने सुख – स्वार्थ के लिये झूठ नहीं बोलना।

6 Jan., 1969

क्रोध कभी नहीं करना चाहिये। क्रोध करने से दान-पुण्य, व्रत, जप-तप, आदि शुभ कर्म नाश हो जाते हैं।

7 Jan., 1969

जीव मात्र पर दया करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है।

8 Jan., 1969

जैसा अन्न तैसा मन । तमोगुणी आहार से मन तामसी, रजोगुणी आहार से राजसी और सतोगुणी आहार से मन सात्त्विक होगा।

9 Jan., 1969

जिसने त्याग किया है उसे ही परमपद की प्राप्ति हुई है, संसार में वही यशस्वी और पूज्य है।

10 Jan., 1969

जो मनुष्य अपने को मुसाफिर समझता है और यह सोचता है कि मैं संसार की सराय में दो दिन का मेहमान हूँ, मुझे यहाँ गुज़रान ही करना है, वह कभी भी दुखी नहीं होगा।

11 Jan., 1969

जिसने मन को अपने वश में कर लिया उसने सारे संसार पर विजय प्राप्त कर ली, दुनिया में वह धन्य है। उसका कोई भी दुश्मन नहीं रहा।

12 Jan., 1969

अनात्म अभिमानी से चाण्डाल अच्छा है क्योंकि वह अपने को गन्दगी से अलग समझता है। देह अभिमानी अपने आप को ही शरीर समझता है।

13 Jan., 1969

आप किसी से भलाई करो तो वह भुला देना परन्तु जो कोई आपसे भलाई करे तो वह कभी नहीं भूलो।

14 Jan., 1969

यह मन मरने को जानता है परन्तु मानता नहीं और भगवान को मानता है परन्तु जानता नहीं।

15 Jan., 1969

प्रत्येक मनुष्य को भोजन थोड़ा खाना चाहिये। रात्रि को आधा भोजन करना अच्छा है। इससे विवेक शक्ति और आयु बढ़ेगी। अनाज बचेगा, देश की सेवा होगी, और भी कई लाभ हैं।

16 Jan., 1969

सबसे गुण उठाना चाहिये। जैसे भंवरे, मधुमक्खियां व हंस पक्षी सार को ग्रहण करते हैं। उसका अवगुण वो जाने, आप गुणग्राही बनो। यह बात ध्यान में रखकर अपने चित्त को प्रसन्न रखो।

17 Jan., 1969

सच का व्यवहार करना सारे मनुष्यों का परम धर्म है। सच की कमाई का एक रूपया पाप की कमाई के पांच रूपयों से अधिक अच्छा है।

18 Jan., 1969

बड़े आदमियों से मित्रता करो। छोटे, गरीबों पर दया करो। ऐसा करने से आपका चित्त सदैव प्रसन्न रहेगा।

19 Jan., 1969

वक्त का पाबन्द रहना सबके लिये सुखदाई है। किसी को दस बजे अमुक स्थान पर मिलने का टाइम दिया हो तो उस समय से पांच मिनट पहले वहां पहुंच जाओ।

20 Jan., 1969

जो मनुष्य अपना स्वार्थ छोड़कर गरीब, दुखी, अनाथ और देश की सेवा करता है, उसका जीवन सफल और धन्य है।

21 Jan., 1969

मौके के दान, तीर्थ स्नान, गरीब, अनाथ, भगवान, सन्त, और देश की सेवा से बड़ा फल मिलता है। विद्या पढ़ना और भजन करना इत्यादि मौके का प्रत्येक कार्य अधिक फलता है।

22 Jan., 1969

सुख – दुख, मान- अपमान , स्तुति-निन्दा, गर्मी - सर्दी इत्यादि द्वन्द्वों को सहन करना मनुष्य का भूषन है।

23 Jan., 1969

बिना कारण किसी भी जीव को नहीं दुखाना, यही मनुष्य का धर्म है। दिल रूपी मन्दिर में दिलदार " प्रभू" रहता है।

24 Jan., 1969

साधु, ब्राह्मण आदि सारे मनुष्यों को भगवान का भोजन अपने अधिकार के अनुसार काम (सेवा) करके खाना चाहिये। मुफ्त खाना धर्म नहीं है।

25 Jan., 1969

जो मनुष्य सदैव अपने को मुसाफिर जानता है और यह सोचता है कि मुझे संसार रूपी मुसाफिरखाने में गुज़रान ही करना है, वह कभी दुःखी नहीं होगा।

26 Jan., 1969

शरीर का अभिमान छोड़कर सन्तोष और धैर्य धारण करो। ऐसा करने वाले पर भगवान प्रसन्न होते हैं।

27 Jan., 1969

इस मनुष्य को परलोक बनाना चाहिये। एक परलोक तो वह है जहां हमें मरकर जाना है। और दूसरा परलोक बुढापा है, उसे भी बनावें।

28 Jan., 1969

जो दरवाजे के अन्दर आवे उसे सम्मान दें। यही सबसे बड़ा दान है।

29 Jan., 1969

बार-बार अपने मन को समझाना, सत् शास्त्र, संत और गुरू के वचन में विश्वास बंधाना और प्रभु का नाम स्मरण करना, यही भगवान की सच्ची भक्ति है।

30 Jan., 1969

दूसरों का यश सुनकर ईर्ष्या से नहीं जलना चाहिये।

31 Jan., 1969

शरीर जर्जर हो गाया ।

देह महल में बैठ के, कीनी मौज महान।

अब तो यह पुराना भया, करना है गुज़रान।

1 Feb., 1969

भावना है सफ़ा तो सभी है नफ़ा।

भावना है बद तो सौदा है रद्द।।

भावना शुद्ध रखो।

2 Feb., 1969

जो बात सुनो या देखो उसका विचार करो। बिना विचारे चित्त को दुःखी न करो।

3 Feb., 1969

जो समय गुज़र जावे उसका पश्चाताप नहीं करना। चित्त को प्रसन्न रखो, दुःखी मत हो।

4 Feb., 1969

यदि सुख को चाहो तो दुःख से मत डरो, क्योंकि सुख है ही दुःख के अन्दर।

5 Feb., 1969

मान और स्वार्थ को छोड़कर मेलाप करो। इससे सर्व दुखों को निवृति और परमानन्द की प्राप्ति होगी।

6 Feb., 1969

जो मनुष्य जगत में जीते ही मरा है उसे काल नहीं मारेगा। मरना क्या है? अहङ्कार को त्यागना।

7 Feb., 1969

दुनिया में मनुष्य वही है जो सुख-दुःख में एक समान रहता है। उसका सङ्ग करना सदैव सुखदाई है।

8 Feb., 1969

लोभ लालच में पड़कर अपना भेष और धर्म नहीं बदलना चाहिये।

9 Feb., 1969

दुनिया में बिगाड़ने वाले बहुत हैं। बनाने वाले थोड़े हैं। बनाने वाला भगवान का साक्षात् स्वरूप है।

10 Feb., 1969

यह सारा संसार संकल्प का रचा हुआ है जैसे स्वप्न के पदार्थ देखने में आते हैं पर हैं नहीं।

11 Feb., 1969

जिस मनुष्य के दिल में दया नहीं है वह पशु से भी नीच है, नीच से भी नीच है।

12 Feb., 1969

अधर्मी और भयंकर देश में नहीं रहना चाहिये। वहां भजन नहीं होगा और धर्म भी नहीं रहेगा।

13 Feb., 1969

दैत्य और देवताओं का कोई अलग प्रांत या देश नहीं है। जिसमें आसुरी सम्पदा के गुण हैं वह दैत्य है और जिसमें दैवी सम्पदा के गुण हैं वह देवता है।

14 Feb., 1969

यह जीव सत् चित् आनन्द स्वरूप है। इसमें दुःख का लेश भी नहीं है। परन्तु इसने आपही दुःख खरीद किया है।

15 Feb., 1969

अनात्म अभिमानी ही यमपुरी में जाकर धर्मराज को लेखा देता है। जिसने अहम् त्याग दिया है, वह नहीं।

16 Feb., 1969

मूर्ख का संग सदा दुःखदाई है, इससे मरना अच्छा है। विवेकी पुरूष का संग सुखदाई है।

17 Feb., 1969

संसार में जो मनुष्य अपना ही सुख चाहता है, वह मरा हुआ है। मगर जो दूसरों का सुख चाहता है, वह जिन्दा है।

18 Feb., 1969

जिस मनुष्य को अपने धर्म का पता नहीं है, वह सूरदास है। वह जहां जाएगा वहां ठोकरें खाकर दुःख ही पाएगा।

19 Feb., 1969

परमात्मा सर्व में है, जीव मात्र की सेवा करना उसी की ही सेवा है।

20 Feb., 1969

जैसा अन्न तैसा मन । तमोगुणी आहार से मन तामसी, रजोगुणी से राजसी और सतोगुणी से सात्त्विक होगा।

21 Feb., 1969

संसार स्वप्न और सिनेमा के समान है। देखने में आता है परन्तु है नहीं।

22 Feb., 1969

बाहर की तलवार का वार एक से दो कर देता है। परन्तु प्रेम की तलवार दो को मिलाकर एक कर देती है।

23 Feb., 1969

जिसने यौवन में मन इन्द्रियों को जीतकर अपने वश में किया है, वह धन्य है।

24 Feb., 1969

संसार की इच्छाओं को जलाओ तो आत्म स्वराज्य प्राप्त होगा, जो कभी नष्ट नहीं होता।

25 Feb., 1969

अधिकारी बिगर दान देने वाले या लेने वाले दोनों के लिये दुःखदाई है। फलीभूत नहीं होगा।

26 Feb., 1969

इस जीव ने यहां आकर जो मित्र और संगी बनाये हैं उन्हें यहां ही छोड़ कर चला जायगा। कोई सच्चा साथी नहीं है।

27 Feb., 1969

जिसको कुछ बनाना है तो वह अभी जीते जी बनावे। मरने के पीछे कुछ भी नहीं बनेगा।

28 Feb., 1969

जिसे भगवान को देखने की इच्छा है वह पहले अपने आप को देखे।

1 March., 1969

यह जीव सत् चित् आनन्द स्वरूप है। इसमें दुःख का लेश भी नहीं है। अपने अज्ञान से भूलकर महादुखी होकर रो रहा है।

2 March., 1969

देहधारी गुरू के बिगर आत्मज्ञान नहीं होगा। अगर होगा तो फलदायक नहीं होगा और शान्ति नहीं मिलेगी।

3 March., 1969

जो मनुष्य मान और स्वार्थ को छोड़ेगा वह देश व गरीबों की सेवा कर सकेगा।

4 March., 1969

सत्य व मीठा बोलने वाला मनुष्य देश व परदेश जहां भी जायेगा, वहां सुख ही पायेगा। दुःख कहीं नहीं।

5 March., 1969

जिस देश या घर में संगठन, एकता व प्रेम-प्यार है वह देश या घर सदैव बसता रहेगा।

6 March., 1969

मनुष्य जन्म खाने-पीने या सोने के लिए नहीं परन्तु भगवान से मिलने के लिए मिला है।

7 March., 1969

रजोगुण दुःख का कारण है। सत्व गुण सुख का हेतु है।

8 March., 1969

जिस मनुष्य ने मन को जीता उसने सारे संसार को जीत लिया।

9 March., 1969

नासमझ आदमी आप भी दुःख पाता है और दूसरों को भी दुःख देता है। उसका संग मत करो।

10 March., 1969

जिसको भगवान से मिलना है तो वह पहले सन्त, गुरू से मिले।

11 March., 1969

पुनर्जन्म अज्ञानी के लिए है, ज्ञानी के लिए नहीं, इसमें रहस्य है।

12 March., 1969

वास्तव में जन्म-मरण अज्ञान में है। 'शिवोऽहम्'

13 March., 1969

हरि की माया बड़ी विचित्र है। जिसने सब जीवों को मोहित करके बांध लिया है।

14 March., 1969

जिसको पुत्र नहीं है वह तो रो रहा है परन्तु जिसको पुत्र है वह भी रो रहा है। अब क्या करिये? क्या कहिये ?

15 March., 1969

यह संसार मदारी के खेल और सिनेमा के समान है, कुछ है नहीं ।

16 March., 1969

किसी भूले भटके को मार्ग बताकर सीधे रास्ते लगाना बड़ा पुण्य है।

17 March., 1969

हमने देखा है कि जिनको इच्छा है उन्हें कोई नहीं देता, परन्तु जिन्हें इच्छा नहीं है उन्हें सब देते हैं।

18 March., 1969

दुनिया में कोई भी पदार्थ दुःखदाई नहीं है। इस जीव की इच्छा ही दुःखदाई है।

19 March., 1969

चाहना ही नहीं तो चिन्ता किस बात की। निश्चिंत मन वाला बेपरवाह होता है। वही राजाओं का राजा है।

20 March., 1969

सिनेमाओं का सुधार करना चाहिये। नहीं तो नास्ति (बर्बादी) का कारण बनेंगी।

21 March., 1969

हम सब भारत की सन्तान हैं इसलिए वैर-विरोध छोड़कर आपस में प्रेम-प्यार करें।

22 March., 1969

जीव का कर्म और धर्म ही परलोक का संगी है। और कोई नहीं।

23 March., 1969

बहुत जीने से कोई फायदा नहीं, जल्दी मरने से भी कोई फायदा नहीं। फायदा है कुछ करने में। वह करो।

24 March., 1969

भगवान संसार को खुशी से बनाकर अब फंस गया है।

25 March., 1969

दुनिया में बिगाड़ने वाले बहुत हैं, बनाने वाले थोड़े हैं।

26 March., 1969

मनुष्य बड़ा बने तो सहारा करे और छोटा बने तो आज्ञा माने। यह दोनों के लिए अच्छा है।

27 March., 1969

जो जिते मरा है, उसको काल नही मारेगा, वह अमर है।

28 March., 1969

समय-समय का अपना प्रभाव होता है। यह विवेकीपुरूष जानते हैं।

29 March., 1969

जिस कार्य में पहले सुख देखने में आता है उसका परिणाम दुःख होता है। जिसका अन्त नही।

30 March., 1969

जिस कार्य में पहले दुःख देखने में आता है उसका परिणाम सुख होता है।

31 March., 1969

मनुष्य जो कार्य प्रारम्भ करे उसे अवश्य पूर्ण करे ।

1 April, 1969

अपने-अपने धर्म में रहना चाहिये। अपना धर्म ही सुखदाई है।

2 April, 1969

पुरूषार्थ ही दैव है इसलिए पुरूषार्थ करो। पुरूषार्थी की जय है।

3 April, 1969

अब सारा व्यवहार फैशन का हो गाया है। फैशन से देश फना (बर्बाद) हो गया है।

4 April, 1969

आज कल के लोगों को सिनेमा, सिगरेट, पान, सुपारी और चाय के अलावा कहीं भी सुख देखने में नहीं आता है।

5 April, 1969

आप अपनी तरफ से सबकी भलाई करते रहो। उनकी गति वे ही जानें।

6 April, 1969

जिसको प्रेम-श्रद्धा नहीं है उसको उपदेश नहीं करना।

7 April, 1969

बहनी, सहनी, कहनी, रहनी जिस मनुष्य में ये चार गुण हैं उसे जल्दी ही सत् पद की प्राप्ति होगी।

8 April, 1969

अपने धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म में जाना पाप है।

9 April, 1969

आप सच्ची भक्ति और सेवा करते रहो उसमें कोई दुःख आवे या निन्दा हो तो घबराओ मत।

10 April, 1969

आपको परमात्मा ने जो कुछ धन आदि दिया है, वह सब में बांट कर खाओ। यदि सब में नहीं तो पड़ौसियों में बांट कर खाओ, अकेले नहीं।

11 April, 1969

अपने आप को जानना ही भगवान को पहचानने की कुंजी है।

12 April, 1969

यह जीव सत् चित आनन्द स्वरूप ईश्वर का अंश है।

13 April, 1969

राम रामेति सब घट में रम रहा है विवेकी उसे देख रहे हैं।

14 April, 1969

ये सब विष्णु भगवान हैं पर अज्ञानी नहीं देखते।

15 April, 1969

जो मुझ में है सो तुझ में है।

जो तुझ में है, सो सब में है।

16 April, 1969

भगवान ही एक से अनेक हुआ है तो भी एक ही है, भूलो मत।

17 April, 1969

प्रभु से प्रार्थना करो कि, हे भगवान! मेरे द्वारा तन, मन या वाणी से किसी की दिल दुःखी न हो।

18 April, 1969

दुःख में घबराना नहीं, पुरूषार्थ करना।

19 April, 1969

सारे पदार्थ पुरूषार्थी के लिए हैं। आलसी के लिये नहीं।

20 April, 1969

जो मरने से पहले मरा है उसे काल नहीं मार सकता।

21 April, 1969

रूठना चाहिए या नहीं? रूठना तो अच्छा है परन्तु जिसमें फायदा हो।

22 April, 1969

संसार के कार्य तो कभी भी समाप्त नहीं होते। एक समाप्त हुआ ही नहीं कि दूसरा काम सामने खड़ा है।

23 April, 1969

साक्षी चेतन के प्रकाश से सारा विश्व चमक रहा है।

24 April, 1969

जो मनुष्य बल होते निर्बल रहता है वह धन्य है।

25 April, 1969

जैसा संग तैसा रंग। इसीलिए अच्छा संग करना चाहिए।

26 April, 1969

बड़ा बनना चाहते हो तो छोटे बनो।

27 April, 1969

जिसने यौवन में मन, इन्द्रियों को जीता है वह पुरूष पुरूषोत्तम का रूप है।

28 April, 1969

दूसरों को समझाना सुगम है। अपने आप को समझाना बड़ा कठिन है।

29 April, 1969

संसार में मन जैसा कोई शत्रु नहीं है पर मन जैसा मित्र भी कोई नहीं है।

30 April, 1969

नफे की दावा (लालच) छोड़ो तो घाटा कभी पड़े ही नहीं।

1 May, 1969

वैराग्य के बिगर भगवान की इस माया से कोई भी छूट नहीं सकेगा।

2 May, 1969

दुःखों की निवृत्ति आत्मज्ञान के बिगर नहीं होगी।

3 May, 1969

अज्ञानी मनुष्यों से पशु-पक्षी भी अच्छे हैं, उन्हें जैसे सिखाओ, वैसा करते हैं।

4 May, 1969

त्याग, तितिक्षा, शुक्र और सब्र फकीरी के भूषण हैं।

5 May, 1969

दूसरे के दुःख में दुःखी मत हो, सेवा और पुरुषार्थ करो।

6 May, 1969

यह सारा संसार स्वार्थ का है। दुःख में कोई किसी का नहीं है।

7 May, 1969

भगवान अनन्य प्रेमी भक्त को दुःख, गरीबी और निन्दा, ये सौगात पहले ही देता है।

8 May, 1969

संसार में बिना मतलब कोई किसी का साथी नहीं है।

9 May, 1969

मनुष्य जन्म में ही भगवान का दर्शन करो। चौरासी लाख योनि में नहीं होगा।

10 May, 1969

भगवान का दर्शन करो, भगवान आपके निकट आया है, अन्य योनियों में आपसे दूर हो जायगा।

11 May, 1969

जिज्ञासु के लिए गुरू-मन्त्र के समान अन्य कोई मन्त्र नहीं है।

12 May, 1969

आत्मराम का दर्शन इन्द्रियों का विषय नहीं है, अनुभव से होगा।

13 May, 1969

मुर्ख आदमी हित का वचन मानता नहीं है।

14 May, 1969

पहले अपने आप को समझाओ, दूसरों को बाद में।

15 May, 1969

जो जिज्ञासु गुरू भक्ति करता है वह चौरासी में नहीं जायगा।

16 May, 1969

शान्ति को चाहते हो तो अपने शरीर व इन्द्रियों को शान्त (स्थिर) करो।

17 May, 1969

अच्छे लक्षणों और स्वभावों वाले को ही सन्त या महात्मा कहते हैं।

18 May, 1969

इस जीव की प्रारब्ध में जो लिखा है वह अवश्यमेव भोगना पड़ेगा।

19 May, 1969

शुभ मार्ग में उठाया हुआ कदम निष्फल नहीं होता।

20 May, 1969

जो रास्ता लेकर पूछता जाता है वह अपने लक्ष्य पर जल्दी पहुंचेगा।

21 May, 1969

शुभ कार्य करने में आलस्य मत करो।

22 May, 1969

निष्काम कर्म बन्धन का हेतु नहीं है।

23 May, 1969

जिसको गरीब-अनाथों और देश की सेवा करनी हो वह पहले मन और स्वार्थ को छोड़े।

24 May, 1969

साक्षी चेतन की ज्योती से सूर्य, चन्द्र, चौदह लोक, पिण्ड, ब्रह्माण्ड, सब प्रकाशित हो रहे हैं।

25 May, 1969

आत्म देव ही महादेव है, जिसकी तैतीस करोड़ देवता पूजा करते हैं और उसकी आज्ञानुसार चलते हैं।

26 May, 1969

परिपूर्ण पारब्रह्म ही एक से अनेक हुआ है, तो भी एक ही है। जैसे सोने से भूषण, रूई से वस्त्र और मिट्टी से □र्तन।

27 May, 1969

मन को आदती नही□बनाना चाहिए। आदत ही दुःख देती है।

28 May, 1969

हर एक मनुष्य को प्रातःकाल सवेरे उठना चाहिये। जिससे नेत्रों में रोशनी और विवेक शक्ति बढ़ेगी।

29 May, 1969

रात्रि को भोजन थोड़ा खाना चाहिये। जिससे आयु और बुद्धि बढ़ेगी। अनाज बचेगा और देश की सेवा होगी।

30 May, 1969

आत्मा अन्दर-बाहर आकाश जैसे व्यापक है, जिसमें आना, जाना, घटना, बढ़ना आदि नही□है।

31 May, 1969

यह त्रिगुणी माया ईश्वर से पैदा हुई है और फिर इसने ईश्वर को ही □ाप लिया है।

1 June, 1969

भगवान की माया बड़ी प्रबल है सारे जीवों को मोह रूपी जाल में ऐसा फंसाया है जो निकल नही□ सकते।

2 June, 1969

जैसे सेंवर (काई) पानी को □ाप लेती है वैसे ही योग माया ईश्वर को □ाप लेती है।

3 June, 1969

श्रवण का सम्पूर्ण फल तब होगा जब मनन और निदिध्यासन करेंगे।

4 June, 1969

सत्य के आधार पर सारा ब्रह्माण्ड स्थित है। सत्य ही मनुष्य का जीवन है।

5 June, 1969

जितना हो सके निर्भय देश और पावन भूमि में रहना चाहिये।

6 June, 1969

पूर्ण सत्गुरू की प्राप्ति, सन्तों का सङ्ग और गङ्गा का किनारा भाग्य से मिलता है।

7 June, 1969

विवेकी मनुष्य के लिये गुलामी दुःखदायी है।

8 June, 1969

ये निश्चय करो कि जिसकी प्रारब्ध पूरी हुई, वह नहीं रहेगा और जिसकी है वह नहीं जायगा।

9 June, 1969

जो दूसरे का चित्त प्रसन्न करता है उसे चारों धाम करने का फल मिलता है।

10 June, 1969

जो मनुष्य थोड़े में ही खुश हो, उसे निराश नहीं करना।

11 June, 1969

संसार में मनुष्य देखने में बहुत आते हैं लेकिन मनुष्यता का आचरण करने वाले बिल्कुल थोड़े हैं।

12 June, 1969

दुनिया में जितना सुख है उतना दुःख है। सुख के पीछे दुःख है और दुःख के पीछे सुख है।

13 June, 1969

जिसको बच्चा नहीं है वह रो रहा है परन्तु जिसको है वह भी रो रहा है।

14 June, 1969

आप सारे जीवों के हितकारी बनो। सबका भला करते रहो।

15 June, 1969

आप भगवान की लीला देखते रहो, चित्त को दुःखी न करो।

16 June, 1969

विश्वास के बिगर व्यवहार या परमार्थ का काम सिद्ध नहीं होगा।

17 June, 1969

हे मेरे मन! मालिक मत बनो।

अगर दावा रखोगे तो दुःख पाओगे।

18 June, 1969

आप यहां थोड़े समय के लिये सैर करने आये हो। खुश होकर जाओ।

19 June, 1969

युग-युग का अपना प्रभाव होता है। इस कलियुग में रजोगुण प्रधान है। अशान्ति व बेआरामी बढ़ती जाती है।

20 June, 1969

व्यवहार का अथवा परमार्थ का ज्ञान संग से ही होता है। जैसा संग वैसा रंग।

21 June, 1969

जिसने चित्त का त्याग किया है वह सर्वत्यागी है। वह चाहे वन में रहे या नगर में।

22 June, 1969

थोड़े जीने के लिये पाप मत करो। किसी भी जीव को सताओ मत।

23 June, 1969

भारतवासी वह है जो शरण में आये हुए को धिक्कारता नहीं। सबको मित्र बनाना चाहता है।

24 June, 1969

हे मेरे मित्रो!

आप सच्ची भक्ति, और सेवा करते रहो, लोक निन्दा से डरो मत।

25 June, 1969

कोई मनुष्य आप के सङ्ग में आये तो उसे सुधारने की कोशिश करो, निकालने की नहीं।

26 June, 1969

फकीरी धर्म, देशसेवा और मनुष्य जन्म का स्वाँग पहनके उसे लज्जाना नहीं, निभाना।

27 June, 1969

इस जीव का किया हुआ पाप कर्म ही यमदूत बनकर परलोक के मार्ग में इसे दुःख देता है और कोई नहीं।

28 June, 1969

माताओं को अपने घर का काम, चक्की चलाना, चरखा कातना, भोजन बनाना आदि अपने हाथों से ही करना चाहिये।

29 June, 1969

हे मेरे मन!

अगर तुम यश को चाहो तो छोटे बन जाओ।

30 June, 1969

सुनना, समझना और कहना सुगम है परन्तु उस पर स्थिति करना (चलना) कठिन है।

1 July, 1969

श्रवण का फल मनन है, मनन का फल निदिध्यासन और निदिध्यासन का फल साक्षात्कार है।

2 July, 1969

अपने आप को देखना चाहो तो देहधारी पूर्ण सत्गुरू के पास जाओ।

3 July, 1969

जिसने आत्मतीर्थ किया है उसने चारों धाम कर लिये और सारे तीर्थ नाहय लिये।

4 July, 1969

भगवान के बगीचे में आपको घूमने का अधिकार है, फल फूल शाखा तोड़ने का नहीं।

5 July, 1969

मूर्ख आदमी दूसरे को भी दुःख देता है और आप भी दुःखी रहता है।

6 July, 1969

गुरूमुख, धर्मात्मा, सज्जन पुरूष, संसार से जल्दी चले जाते हैं। पापी, दुष्ट बहुत समय जीते हैं।

7 July, 1969

परमात्मा न्याय तो पूरा-पूरा करता है परन्तु कुछ देर से। इसमें आप घबराना नहीं।

8 July, 1969

देखने वाले को देखो, जानने वाले को जानो तो सारा खटका ही खत्म हो जाय।

9 July, 1969

सारग्राही मनुष्य संसार में सदैव सुखी रहता है।

10 July, 1969

सौ जन्म के बाद भी पाप-पुण्य कर्म का फल भोगोगे। इसलिये पाप मत करो।

11 July, 1969

जो कुछ परमात्मा ने धन विद्या आदि दिये हैं वह बांट कर खाओ।

12 July, 1969

आत्म ज्ञान का फल है परम शान्ति और चित्त सदैव प्रसन्न रहे।

13 July, 1969

आप सदवै सबके हित, भलाई का बीज बोते रहो, कभी न कभी अवश्य फलेगा।

14 July, 1969

जितना हो सके अपने हाथ से काम करो दूसरे को मत कहो।

15 July, 1969

अभिमानी मनुष्य को सत-गुरू का वचन फलीभूत नहीं होगा।

16 July, 1969

मन को अन्तर्मुख स्थित करना ही भगवान का भजन है।

17 July, 1969

कार्य करने के पीछे जो विचार आता है वह यदि पहले आवे तो कभी दुःख न होवे।

18 July, 1969

इस जीव को किसी ने भी फसाया नहीं है। यह आप ही लोभ-लालच से फस गया है।

19 July, 1969

हर एक मनुष्य को अपने धर्म, सन्मार्ग में चलना चाहिये।

20 July, 1969

ब्रह्म ज्ञानी को भी अन्य मनुष्यों के लिये नीति-मर्यादा रखनी चाहिये।

21 July, 1969

जो अपना मान छोड़कर दूसरे का सम्मान करता है वह धन्य है।

22 July, 1969

शरीर को बहुत फैशन से मत सींगारो। दैवी सम्पद् के गुणों से सींगारो।

23 July, 1969

जिस गंदे शरीर पर गर्व करते हो वह तो एक दिन मिट्टी में मिल जायगा।

24 July, 1969

दुनिया में कहने वाले मनुष्य बहुत हैं, करने वाला कोई विरला है।

25 July, 1969

भगवान, गुरू और देश की भक्ति करना सुगम है परन्तु उसे निभाना कठिन है।

26 July, 1969

सब दुःखों की निवृत्ति, परमानन्द की प्राप्ति चाहो तो अपनी दावा छोड़ो।

27 July, 1969

आप भक्ति, शुभ कर्म का बीज बोते जाओ कोई न कोई दाना अवश्य उगेगा।

28 July, 1969

साक्षी चेतन अगामी, अनामी, न दास न स्वामी है। वह तेरा निज स्वरूप है।

29 July, 1969

हर एक मनुष्य को विपत्ति काल में धैर्य करना चाहिये।

30 July, 1969

संसार में झगड़े फसाद अनादि काल से चले आते हैं। इनसे क्यों घबरायें।

31 July, 1969

परमात्मा सदैव तेरे पास है। अपने को अकेला मत मानो।

1 August, 1969

राम राज्य को चाहते हो तो पहले स्वार्थ छोड़ो। सत्यवादी बनो।

2 August, 1969

जो शुभ कार्य में पुरूषार्थ करता है, उसे भगवान सहायता देता है।

3 August, 1969

पहले अपनी फर्ज़ अदाई करो। बाद में कर्तार (प्रभु) करेगा।

4 August, 1969

परमात्मा से मिलना चाहो तो दासों के भी दास बन जाओ।

5 August, 1969

जितना हो सके अपनी सेवा आप करो। दूसरों को मत कहो।

6 August, 1969

यह संसार आपके ख़याल से बनता है, आपके ख़याल से स्थित है और आपके ख़याल से लय होता है।

7 August, 1969

सर्व दुःखों की निवृत्ति, परमानन्द की प्राप्ति, ब्रह्म ज्ञान के बिगर नहीं होगी।

8 August, 1969

यह जीव सदैव यहाँ रहना चाहता है, पर रहेगा नहीं।

9 August, 1969

अपने आपको समझाने जैसा कठिन काम दुनिया में और कोई नहीं है।

10 August, 1969

सुख-दुख, हर्ष-शोक अन्तःकरण के धर्म हैं, आत्मा के नहीं।

11 August, 1969

विवेक से वैराग्य होता है, जो आत्म ज्ञान व जीवन मुक्ति का हेतु है।

12 August, 1969

हर एक मनुष्य को अपने लक्ष्य पर पहुंचना चाहिये।

13 August, 1969

संसार में जीना अच्छा है, लेकिन बेकार (बिना काम के) नहीं।

14 August, 1969

दुनिया में शूरवीर वह है जिसने मन-इन्द्रियों को जीता है।

15 August, 1969

जो बननी है वह अवश्यमेव बनेगी। तुम साक्षी होकर देखते रहो।

16 August, 1969

यौवनावस्था में जो नम्र होता है, वह भगवान का स्वरुप है।

17 August, 1969

सतोगुणी और अल्प आहर से विवेक शक्ति और आयु बढ़ेगी।

18 August, 1969

परमात्मा को एकदेशीय नहीं मानना परन्तु सर्वदेशीय व्यापक जानना।

19 August, 1969

साक्षी चेतन सर्व को देख रहा है, उसको कोई विरला देखता है।

20 August, 1969

थोड़ा बोलने से विवक शक्ति और शान्ति बढ़ेगी।

21 August, 1969

प्रातःकाल चार बजे उठने से विवेक-शक्ति और नेत्रों की रोशनी बढ़ेगी।

22 August, 1969

सत्संग से विवेक शक्ति और प्रभु से मिलने की प्यास बढ़ेगी।

23 August, 1969

अहिंसा बड़ी फलदायक और सुखदाई है, परन्तु कहीं-कहीं पर हिंसा भी कल्याणकारी होती है।

24 August, 1969

देश की सेवा हर एक मनुष्य को यथा शक्ति करनी चाहिये।

25 August, 1969

सच बोलना बड़ा धर्म है, परन्तु कहीं-कहीं पर झूठ बोलना भी पुण्य होता है।

26 August, 1969

बबर शेर के समान इस जीव को चाहना रूपी चूहे ने ऐसा पकड़ा है, जो छूट नहीं सकता।

27 August, 1969

सिनेमा को सुधारने और क्लब व घोड़ों का खेल बन्द करने से देश के अन्दर महान् शान्ति होगी।

28 August, 1969

तत्त्व वेत्ता, अभेदी, निष्काम महात्मा इस भारत का भूषण (सींगार) है।

29 August, 1969

या तो यह कहो, सब मैं हूं और या तो ये कहो, कि मैं नहीं हूं। दोनों में से एक निश्चय करो।

30 August, 1969

जो कुछ बोलना होता है, वह द्वैत में, अद्वैत में नहीं। (अद्वैत में) चुप।

31 August, 1969

रजोगुण और फैशन मत बढ़ाओ, ये दोनों दुःख के हेतु हैं।

1 Sept., 1969

यह जीव दुनिया में दावा रखकर दुःखी हुआ है, नहीं तो दुःख कहां?

2 Sept., 1969

ये जो कुछ आप देख रहे हैं, सो सब मन का ही तमाशा है।

3 Sept., 1969

सारी जिम्मेवारी बड़ो पर है, छोटों पर नहीं। छोटा होना अच्छा है।

4 Sept., 1969

किसी भी कार्य की चिन्ता नहीं करना, पुरूषार्थ करना।

5 Sept., 1969

जो जन्मा है वह मरेगा। जो आया है वह अवश्य जायेगा। आत्मा अविनाशी है।

6 Sept., 1969

अज्ञानी जीता है खाने के लिये और ज्ञानी खाता है जीने के लिये।

7 Sept., 1969

विवेक, वैराग्य, वीरता और विश्वास ये चारों रत्न किसी बड़भागी को ही मिलते हैं।

8 Sept., 1969

प्रेम (लग्न) और रास्ते (विधि) के बिगर कोई भी लक्ष्य पर नहीं पहुंचेगा।

9 Sept., 1969

आत्मा अविनाशी है, शरीर नाशी और जड़ है। सुख-दुःख आदि खटके सम्बन्ध से होते हैं।

10 Sept., 1969

जैसे बादल पवन के संचार से चलता है, वैसे ही जीव भी साक्षी चेतन के चमत्कार से ही चलता है।

11 Sept., 1969

यह संसार एक वन है, जिसमें अनन्त जीव गुम हैं। पता नहीं वे कहां जा रहे हैं।

12 Sept., 1969

दुनिया में कहने वाले बहुत हैं परन्तु करने वाले थोड़े हैं।

13 Sept., 1969

यह जीव बब्बर शेर के समान है, परन्तु इसे चाहना रूपी चूहे ने ऐसा पकड़ा है, जो दुःखी होकर चिल्ला रहा है।

14 Sept., 1969

अपने सुख के लिये दूसरों को दुःख नहीं देना चाहिये।

15 Sept., 1969

जीव का पाप कर्म ही परलोक में यमदूत बनकर इसे दुःख देता है।

16 Sept., 1969

अनात्म अभिमानी ही यमपुरी में जाकर धर्मराज को लेखा देता है, और कोई नहीं।

17 Sept., 1969

नहीं जानें तो भी वही है, अगर जानें तो भी वही है, परन्तु जानना अच्छा है।

18 Sept., 1969

आप संसार में रहो परन्तु संसार आप में न रहे।

19 Sept., 1969

आप सब जीवों के हितकारी बन जाओ। सब का भला करते रहो।

20 Sept., 1969

भारत माता को सादगी से सींगारों, फैशन से नहीं।

21 Sept., 1969

यह जीव नफे की दावा छोड़े तो घाटा कभी न पड़े।

22 Sept., 1969

अपने धर्म और जाति से प्यार करो, दुश्मन मत बनो।

23 Sept., 1969

तितिक्षा, वैराग्य और विश्वास, जिज्ञासु को भगवान से जल्दी मिलाते हैं।

24 Sept., 1969

परमात्मा आलसियों को देखकर घबरा जाता है।

25 Sept., 1969

जो दूसरों के माल पर दावा जमायेगा, वह मार खायेगा।

26 Sept., 1969

पुण्यात्मा और विवेकी पुरूषों का सङ्ग करना।

27 Sept., 1969

पारब्रह्म में सारी सृष्टि कल्पित है। जैसे सोने में भूषण।

28 Sept., 1969

साक्षी चेतन के प्रकाश से सारी प्रकृति प्रकाशित है।

29 Sept., 1969

यह आत्मा इन्द्रियों का विषय नहीं है परन्तु अनुभव में आता है।

30 Sept., 1969

यह चैतन्य निर्मल नूर है। जहाँ तहाँ भरपूर है।

1 Oct., 1969

संसार मन में है, आत्मा में नहीं।

2 Oct., 1969

बड़े बनो तो सहारा करो। छोटे बनो तो आज्ञा मानो।

3 Oct., 1969

परमात्मा के पदार्थों पर सब जीवों का अधिकार है।

4 Oct., 1969

जैसे पानी में नाव रहती है वैसे आप संसार में रहो।

5 Oct., 1969

मौके की सेवा बड़ी फलदायक होती है।

6 Oct., 1969

दुनिया में चुप जैसी मीठी वस्तु और कोई नहीं है।

7 Oct., 1969

जिसने भी कुछ पाया है, पुरूषार्थ से। पुरूषार्थी की जय है।

8 Oct., 1969

धर्म, मर्म, शर्म और मर्यादा ये भारतीयों के भूषण हैं।

9 Oct., 1969

इस जीव को अपने कर्म ही सुख-दुःख देते हैं और कोई नहीं।

10 Oct., 1969

मन जैसा शत्रु कोई नहीं है परन्तु मन जैसा मित्र भी कोई नहीं।

11 Oct., 1969

जो अपना यश चाहता है, उसका अपयश होगा।

12 Oct., 1969

सब जनता की सेवा भगवान की ही सेवा है।

13 Oct., 1969

जल्दी करने से देरी हो जाती है।

14 Oct., 1969

यह जीव साक्षी चेतन सूर्य का प्रतिबिम्ब है।

।।इति शुभम्।।